इशारों को अगर समझो

हम सभी एक-दूसरे से बात करने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं। सवाल है कि क्या मनुष्यों की तरह जंतुओं की भी अपनी भाषा होती है, जिसका उपयोग वे एक-दूसरे को अपनी बात समझाने के लिए करते हैं।

युनिवर्सिटी ऑफ सेंट एंड्रयूज़ (यू.के.) की एरिका काटमिल और साथियों ने इस बारे में जानने के लिए कुछ प्रयोग किए। इसके लिए उन्होंने कुछ बंदरों को चुना। उन्होंने इन बंदरों के सामने कुछ स्वादिष्ट व्यंजन, केले और संतरे रखे। सबसे पहले गीना नामक बंदर को बुलाया गया। गीना से पूछा गया (पता नहीं कैसे) कि उसे इनमें से क्या चाहिए। गीना ने हाथ से कुछ इशारा किया। यह वैसा ही था जैसा हम इशारों वाला खेल डम्ब शेराड्ज़ खेलते हैं। एरिका ने गीना को संतरा दिया। गीना ने संतरा नहीं लिया, क्योंकि उसे संतरा नहीं चाहिए था। यह देखकर कि एरिका इशारा नहीं समझ पाई, दूसरे बंदरों ने वहां पड़ी रेत फेंकना शुरू कर दी। जब गीना से फिर पूछा गया तो उसने जो इशारा किया वह कुछ-कुछ केले के आकार का था। केला मिलने पर गीना खुश हुई और वहां बैठे दूसरे बंदरों ने भी तालियां बजाईं। अबकी बार एरिका ने इशारे को सही पहचान लिया था।

असल में गीना का दूसरा इशारा पहले इशारे का ही संशोधित रूप था। यह ठीक वैसा ही है जैसा बच्चे करते हैं - अपनी बात समझाने के लिए वे इशारे को बेहतर बनाते जाते हैं। इससे लगता है कि जानवर अपने इशारों का उपयोग एक भाषा के रूप में एक-दूसरे से बात करने के लिए करते हैं।

एरिका कहती हैं कि ये इशारे कुछ-कुछ मानव शिशुओं के इशारों से मिलते-जुलते हैं। जब बच्चे इशारे में कुछ कहते हैं और हम समझ नही पाते तो बच्चे फिर से उस इशारे को कुछ बदलकर दूसरा इशारा करते हैं ताकि हम समझ पाएं। वे अपने इशारे को तब तक संशोधित करते जाते हैं जब तक कि हम समझ न जाएं। जानवर भी ठीक इसी तरह अपने इशारे संशोधित करते हैं।

कई जीव वैज्ञानिक मानते हैं कि जानवरों की अपनी एक भाषा होती है और इस प्रयोग से कुछ संकेत मिलता है कि वे भाषा का उपयोग कैसे करते हैं। ऐसे प्रयोगों से हमें मनुष्य में भाषा के विकास को समझने में मदद मिल सकती है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***